बलराम - एक शाही हाथी
टेड एवं बेट्सी

हाथी धरती पर रहने वाली विशालकाय पशु हैं. भारत के कई भागों में हाथी शताब्दियों से लोगों के जीवन का एक भाग रहे है. कुछ हाथियों को भारी काम करने के लिये प्रशिक्षित किया जाता है तो कुछ हाथी उत्सवों में भाग लेते हैं. टेड और बेट्सी जब हाथी देखने दक्षिण भारत आते हैं तो उनका परिचय शाही हाथी द्रोण से होता है जो दशहरा के समय निकलने वाली शोभायात्रा की अगुआई करता है.

उस हाथी को देख कर टेड और बेट्सी इतने प्रभावित होते हैं कि अगले वर्ष दशहरा के समय भारत आकर शोभायात्रा देखने का मन बना लेते हैं. लेकिन दूसरी बार आने पर उन्हें पता चलता है कि द्रोण एक दुर्घटना का शिकार हो गया था. अब उसकी जगह एक अन्य हाथी, बलराम, शोभायात्रा की अगुआई करेगा. शोभायात्रा में बलराम पहली बार स्वर्ण हौदा, एक बहुर सुंदर स्वर्ण-जड़ित पालकी, उठाएगा. इस कारण सब उत्सुकता से उस घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं.

टेड और बेट्सी ने दशहरे की शोभायात्रा के अपने अनुभवों को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है जिसे पढ़ कर हर कोई आनंदित होगा.

बलराम

द्रोण को समर्पित

नयी
दिल्ली
INDIA
भारत
मैसूर
नगरहोल
नेशनल पार्क
भारतीय महासागर

विशाल और शानदार हाथी हमारी कल्पना को जिस तरह उत्तेजित करते हैं उस तरह धरती का कोई और प्राणी नहीं कर सकता. भारत में यह भीमकाय पशु लोगों का सम्मान भी पाते हैं और प्रशंसा भी. हाथी चिरकाल से ही भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सवों का भाग रहे हैं.

पुराने समय में दक्षिण भारत के कारापुर जंगल के हाथियों की बहुत मांग हुआ करती थी. महाराजों को उत्सवों में भाग लेने के लिये हाथी चाहिए होते थे और अन्य लोग भारी काम करवाने के लिए हाथी रखते थे. उन्नीसवीं शताब्दी के अस्सीवें दशक से लेकर 1970 तक, जंगली हाथियों को घेर कर पकड़ा जाता था. जंगल में एक बहुत बड़ा गड्ढा खोदा जाता था जिसे पत्तों और पतली टहनियों से ढक दिया जाता था. हाथी के किसी झुंड के दिखाई पड़ने पर, बीसियों लोग ढोल और घड़ियाल बजाते हुए उन हाथियों को खदेड़ते थे. कुछ लोग जलती मशालें लिये हुए, पटाखे भी जलाते थे. सब लोग हाथियों को गड्ढे की ओर ले जाते थे. जब कुछ हाथी गड्ढे में गिर जाते तो गड्ढे के चारों और मज़बूत लट्ठों का बाड़ा बना दिया जाता था. आठ-दस दिन के बाद भूखे और थके हुए हाथियों को गड्ढे से बाहर निकला जाता था. उन्हें बाहर निकालने के लिये बड़े-बड़े लट्ठों और पालतू हाथियों का उपयोग किया जाता था. फिर उन जंगली हाथियों को साधने का काम शुरू होता था.

अब इस तरीके से हाथियों को पकड़ने पर सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया है, क्योंकि इस प्रक्रिया में हाथियों को बहुत कष्ट पहुंचता था. आजकल कारापुर के जंगलों में हाथियों के झुंड बिना किसी भय के, शान्ति से घूमते रहते हैं. जंगल में कई शिविर हैं, जहां पर पालतू हाथियों को रखा जाता है. यह वह हाथी हैं जिन्हें प्रतिबन्ध लगने से पहले ही पकड़ लिया गया था. अन्य हाथी इन शिविरों में ही पैदा हुए थे. इन हाथियों की देखभाल महावत करते है. महावत हाथियों के साथ ही इन शिविरों में रहते है. महावतों का अपने हाथियों के साथ जीवन-भर का घनिष्ठ सम्बन्ध बन जाता है. इन महावतों के बच्चे भी बड़े हो कर महावत ही बनते है.

इन शिविरों में सबसे विशाल हाथी हैं, शाही हाथी हैं.

हाथियों का शिविर

मैसूर से कार में सवार हो कर हम कारापुर जंगल में स्थित नागरहोल राष्ट्रीय पार्क की ओर जाते हैं. हम दक्षिण भारत के प्रसिद्ध हाथी देखने जा रहे हैं. सड़क के दोनों ओर बड़े-बड़े वट वृक्ष हैं, जिन्हें महाराजा ने लगवाया था ताकि उस रास्ते पर आने-जाने वाले लोग सूर्य की भीषण गर्मी से बच कर छाँव में आराम कर सकें. हर ओर दूर-दूर तक धान के खेत हैं, जिनके चारों तरफ ताड़ के पेड़ हैं.

कारापुर जंगल में हम अपने गाइड शंकर से मिलते हैं. उसके साथ हम एक खुली जीप में शिविर की ओर जाते हैं. थोड़े समय बाद ही एक हथनी, अपने बच्चे के साथ, उसी रास्ते पर धीरे-धीरे आते दिखाई देती है. उसकी गर्दन से लटकती घंटी की आवाज़ विलाप करती जैसी लगती है. हथनी के पेट पर एक नया घाव है. रात में वह चारे की तलाश में जंगल के अंदर गई थी. वहां एक गुस्सैल हाथी ने उस पर हमला कर दिया था ओर अपने दाँत से उसे घायल कर दिया था. घाव गहरा है. लेकिन महावत कहता है कि वह जल्दी ही ठीक हो जायेगी.

हथनी हमारी जीप के पास आकर रुक गई. हमने उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आँखों में देखा. “हमने कभी भी हाथी की आँखों में इस तरह नहीं देखा,” हमने एक-दूसरे से कहा. उसकी बड़ी-बड़ी पलकें धीमे-धीमे झपक रहीं हैं.
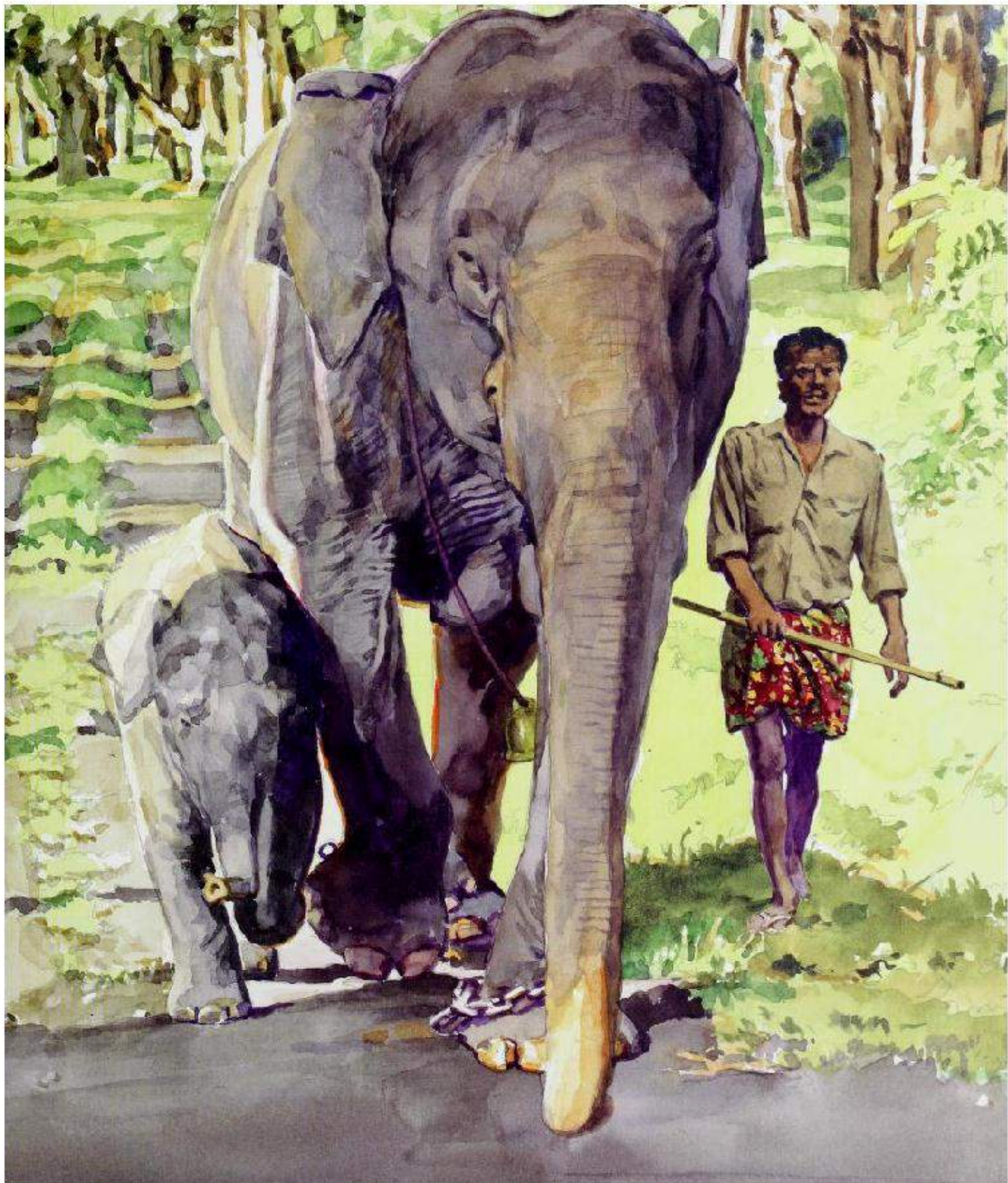
उन दोनों हाथियों के पीछे-पीछे हम शिविर में आते हैं. वहां कुछ मिट्टी की झोपड़ियाँ हैं. शिविर में पाँच और हाथी हैं जिनकी देखभाल उनके महावत कर रहे हैं.
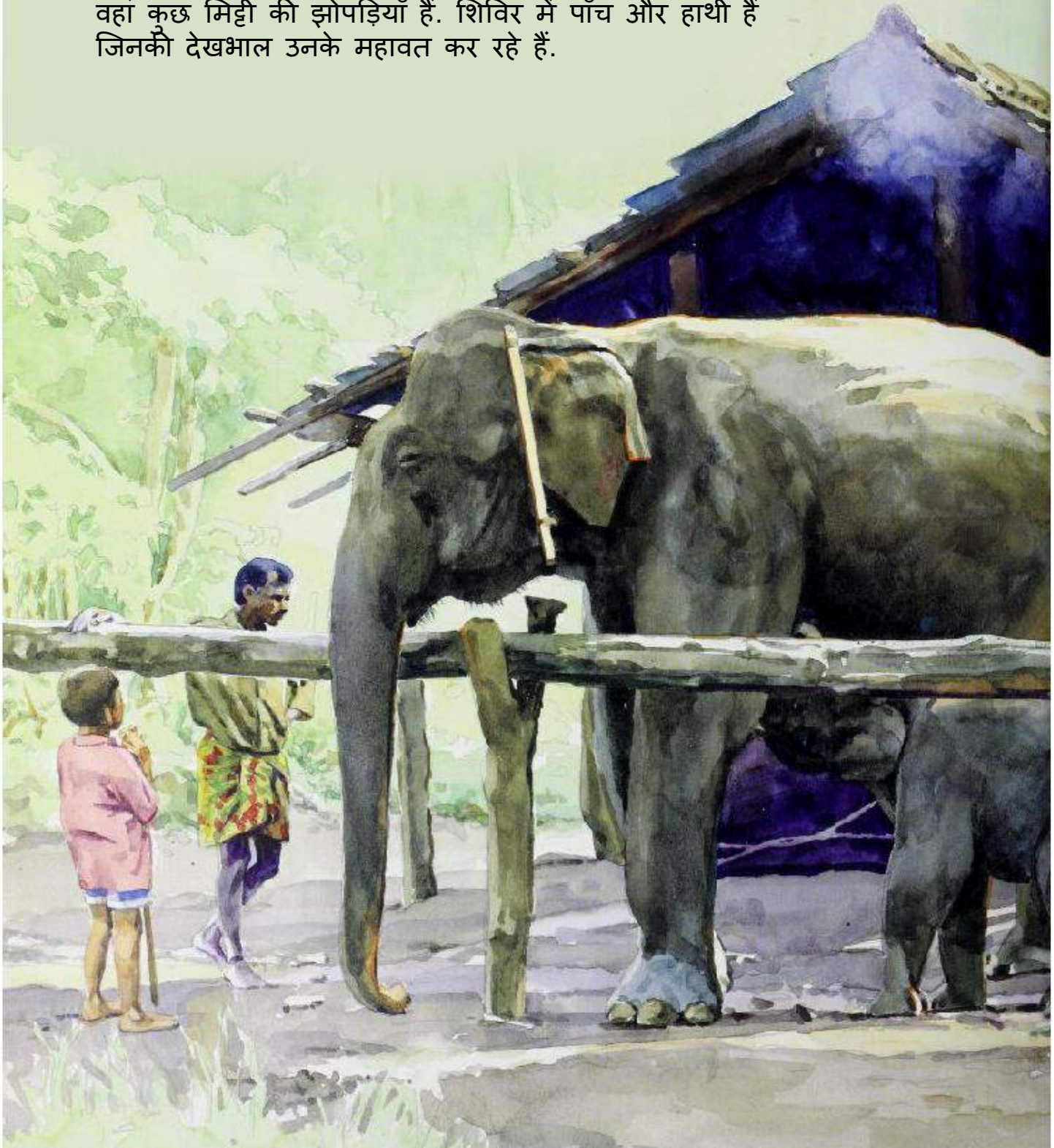
शिविर के एक कोने में एक छोटा-सा मंदिर है, जिसके छज्जे से हाथियों की घंटियाँ लटक रही हैं. मन्दिर के द्‌वार पर सुंदर रंगोली बनी है. रंग-बिरंगे कपड़े पहने और सिरों पर पानी के मटके उठाये औरतें आ रहीं हैं. हाथियों के पास से चलते हुए, वह धीरे-धीरे अपने घरों को जा रहीं हैं.

वहां एक छोटा हाथी भी है जिसका वज़न आठ सौ पौंड के बराबर है. “वह बहुत ही नटखट है,” सुंदर ने कहा. वह हाथी छोटे बच्चों का पीछा करता है और उन्हें शिविर में यहाँ-वहां दौड़ाता रहता है.

सुंदर आग के ऊपर रखे एक बड़े बर्तन के पास खड़ा हो जाता है. उस बर्तन में हाथियों के लिये खिचड़ी पकाई जा रही है. खिचड़ी में नमक, बाजरा और चने का आटा मिलाया गया है. खिचड़ी पौष्टिक है और हाथियों के साथ-साथ बच्चों को भी बहुत पसंद है.

सब बच्चे सुंदर के आसपास खड़े हैं. जो कहानी वह सुनाने वाला है वह उन्हें कंठस्थ है. फिर भी वह कहानी सुनना उन्हें अच्छा लगता है. हम भी वहीं खड़े हो जाते हैं.

"मुख्य शाही हाथी, द्रोण, बहुत ही चालाक है. उसे केले बहुत पसंद हैं. उसे पता है की हर सप्ताह केलों से भरा एक ट्रक जंगल की सड़क से गुज़रता है. एक दिन जब द्रोण को केलों की खुशबू आई, वह सड़क के किनारे आकर ट्रक की प्रतीक्षा करने लगा. जैसे ही ट्रक पास आया द्रोण चुपचाप खड़ा देखता रहा. पहाड़ी की चोटी के निकट पहुँचते ही ट्रक रुक गया. ड्राइवर ने गियर बदल कर उसे आगे ले जाने की कोशिश की पर ट्रक अपनी जगह से हिला ही नहीं. ड्राइवर को समझ न पाया कि ट्रक क्यों चल न रहा था. लेकिन जब उसने पीछे देखा तो हैरान हो गया. एक हाथी ने ट्रक को अपनी सूँड़ से पकड़ रखा था. हाथी को देखकर ड्राइवर और उसका सहायक इतना डर गये कि ट्रक छोड़ कर जंगल में भाग खड़े हुए. द्रोण ने ट्रक को उलट दिया और, एक डिब्बा छोड़, सारे केले खा गया."

कहानी सुन कर बच्चे इस तरह हंसें कि जैसे यह कहानी उन्होंने पहली बार सुनी थी. हम ने शंकर से कहा कि क्या हम द्रोण को देख सकते हैं. उसने बताया कि द्रोण तो काबिनी नदी के पास दूसरे शिविर में है. उसने कहा कि वह हमें वहां ले जाएगा.

दूसरे शिविर की ओर जाते समय सुंदर ने हमें बताया कि द्रोण बहुत ही शक्तिशाली हाथी है. कई वर्ष पहले उसे अम्बेरी हाथी चुना गया था. किसी हाथी को मिलने वाला यह सबसे बड़ा सम्मान है.

मैसूर के महाराजा द्वारा आयोजित शोभायात्रा का सबसे प्रमुख हाथी ही अम्बरी हाथी होता है. चामुंडेश्वरी देवी के सम्मान में, दशहरे के अंतिम दिन, यह शोभायात्रा नगर के बीचों-बीच निकाली जाती है. उस दिन बुराई पर अच्छाई की जीत उत्सव मनाया जाता है.

द्रोण को उसकी विशेष आभा के लिये चुना गया था. उसके अंदर एक तेज है जो सबको प्रभावित करता है. शिविर में हमें द्रोण का महावत मिला. उसने हमें प्रतीक्षा करने के लिये कहा और स्वयं जंगल के अंदर चला गया. वह एक विशाल हाथी को साथ लिये लौटता है जिसके साथ वह धीमे स्वर में बातें कर रहा है. द्रोण का माथा बहुत ही बड़ा है. उसके दाँत मोटे और नुकीले हैं. वह हमारी ओर घूमता है. वह एक शानदार प्राणी है. हम उसकी शक्ति को महसूस कर सकते हैं.

“द्रोण सबसे स्नेह करता है,” सुंदर ने कहा. “लेकिन इसकी शान तो तब देखनी चाहिए जब यह ‘स्वर्ण’ को उठा कर चलता है. उस समय तो इसकी चाल ही बदल जाती है, तब यह बड़े गर्व से चलता है. अपने हाव-भाव से ही यह अन्य हाथियों के संकेत दे देता है कि सब उसके पीछे चलें.”

उसे देख कर हम निश्चय करते हैं कि अगले वर्ष हम फिर आयेंगे और शोभायात्रा में द्रोण को ‘स्वर्ण’ ले जाते हुए देखेंगे.

एक वर्ष बाद

हम दशहरा का उत्सव देखने के लिये फिर दक्षिण भारत आये हैं. द्रोण को शोभायात्रा की अगुआई करते देखने के लिए हम उत्सुक हैं. लेकिन जब हम सुंदर से मिले तो उसने एक दुखद समाचार सुनाया.

"मुझे खेद है, द्रोण की मृत्यु हो गई है," सुंदर ने कहा. "एक दिन वह शिविर के निकट सड़क के किनार पत्ते खा रहा था. शिविर में खाने को बहुत कुछ था. कोई नहीं जानता कि खाने के लिए जंगल के बजाय वह सड़क के किनारे क्यों चला गया था."

द्रोण ने पेड़ की एक बड़ी डाल नीचे खींच ली थी. वह डाल बिजली के तारों पर आ गिरी थी. द्रोण बिजली लगने से मर गया था. उसकी मृत्यु पर मैसूर में सब को बहुत दुःख हुआ था. उसके महावत और शिविर रहने वाले अन्य लोगों को तो ऐसा लगा था कि जैसे उनका सर्वनाश हो गया था. उन्हें लगा था की उन्होंने अपना सबसे प्रिय मित्र खो दिया था.

"क्या आप द्रोण की कब्र देखना चाहेंगे?" सुंदर ने पूछा.

"हाँ, अवश्य," हम ने कहा.
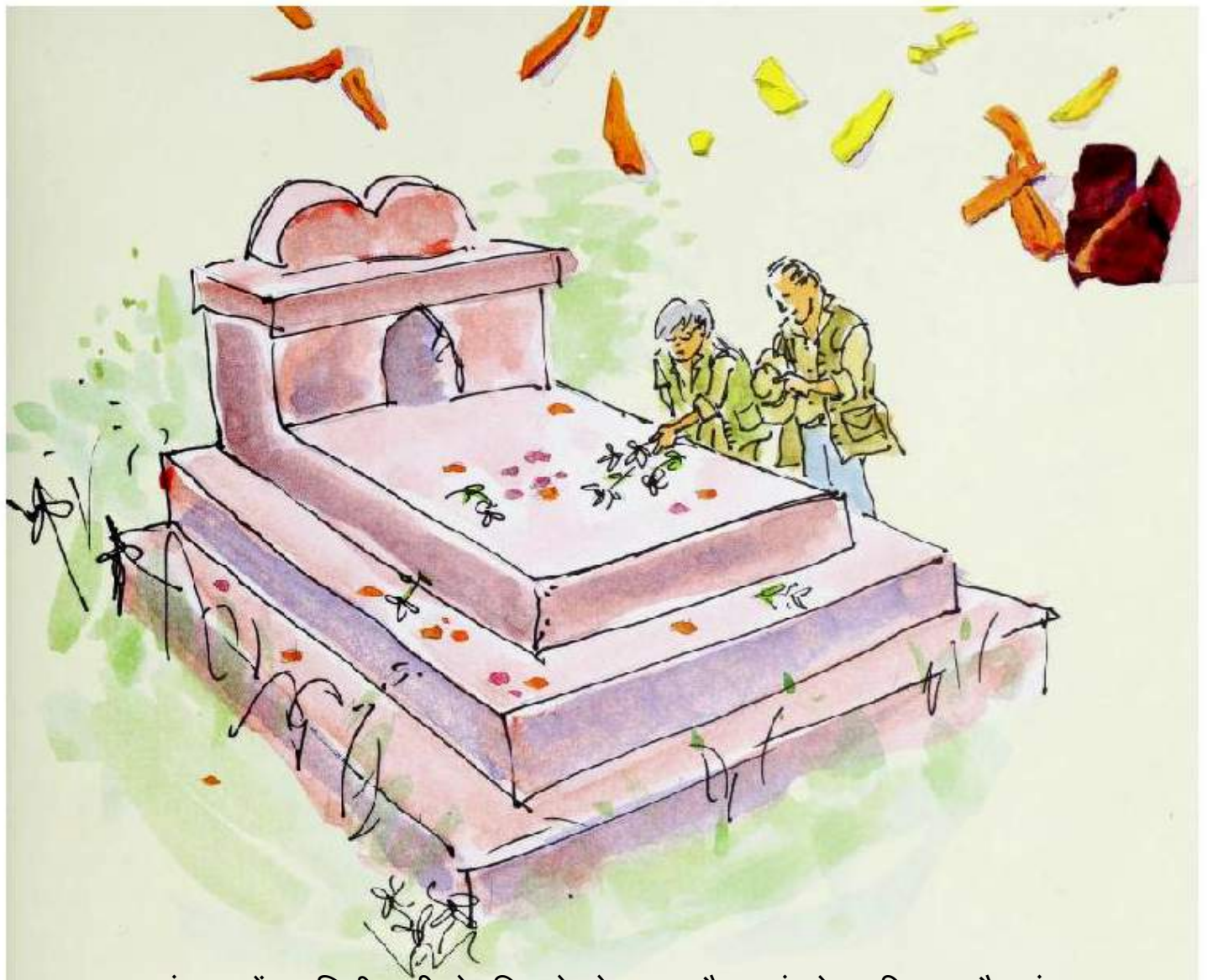
सुंदर हमें काबिनी नदी के किनारे ले जाता है. वहां द्रोण की कब्र है, संगमरमर की बनी तीन तल्ले की कब्र. उस पर द्रोण के चाहने वालों ने जंगली फूल अर्पित कर रखे हैं.

हमें महसूस हुआ कि हमने भी एक मित्र को खो दिया है. हम कुछ पल चुपचाप खड़े रहते हैं. हम भी कुछ जंगली फूल कब्र पर चढ़ाते हैं.

अगले दिन मैसूर में हमारी मुलाकात नागराज से होती है. दशहरा उत्सव के लिये वही हमारा गाइड है. वह सुझाव देता है कि हमें बलराम को देखना चाहिये. द्रोण की जगह अब बलराम ही शोभायात्रा का मुख्य हाथी है.

बलराम पहली बार महराजा की शोभायात्रा की अगुआई करेगा. वह पहली बार स्वर्ण हौदा उठाएगा. हौदे का वज़न आठ सौ पौंड है, यह लकड़ी की बनी सुंदर पालकी है जिस पर सोने की परत चढ़ी हुई है. हौदे के भीतर चामुंडेश्वरी देवी की प्रतिमा रखी जाती है.

महाराजा का महल हमारे होटल की निकट ही है. महल से ही शोभायात्रा शुरू होनी है.

“कुछ लोग मानते हैं कि कोई और हाथी अम्बरी हाथी द्रोण जैसा नहीं हो सकता,” नागराज ने कहा. “बलराम भी शानदार हाथी है, पर शायद उसमें द्रोण जैसा तेज नहीं है.”

हम नागराज के पीछे-पीछे चलते हैं और वह हमें महल के अस्तबल की ओर ले आता है. बलराम को कुछ दिन पहले ही जंगल से यहाँ लाया गया था ताकि वह नगर के वातावरण का आदि हो जाए. बलराम का महावत पहले तो अपने बहुमूल्य हाथी को दिखाने से मना कर देता है. वह हाथी के बाड़े के सामने आकर खड़ा हो जाता है और हमें दूर हटने के लिये हाथ से संकेत करता है.

लेकिन नागराज जब अपना सरकारी बैज दिखाता है तो वह मान जाता है. वह अस्तबल का दरवाज़ा खोलता है और धीमी आवाज़ में हाथी को बुलाता है. धीरे से बलराम थोड़ा-सा बाहर आता है. वह हमारी ओर देखता है. फिर उसका सर और कंधे दिखाई देते हैं जिन पर खूब चमकीली चित्रकारी की गयी है. वह बहुत ही विशाल और शानदार प्राणी है. हम सहम कर थोड़ा पीछे हट जाते हैं.

बलराम ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहा है. वह धीर-धीर आगे पीछे डोल रहा है. उसमें गज़ब की ताकत है. उसके इतने निकट होने के कारण हमारे दिल धड़कने लगते हैं. हम और पीछे हट जाते हैं. फिर महावत को हम संकेत करते हैं की हम संतुष्ट हैं. महावत राहत की सांस लेता है और बलराम धीरे से अपनी जगह वापस चला जाता है.

हमें लगता है कि बलराम भी बहुत तेजस्वी है.

हाथियों की सजावट

बलराम को पीछे छोड़, हम महल की ओर आते हैं. अठत्तर एकड़ की भूमि के बीचों-बीच आलीशान महल है, जहां मैसूर के महाराजा और उनका परिवार रहता है. महल के चारों ओर एक ऊंची दीवार है. आने-जाने के लिये दीवार में चार विशाल फाटक हैं.

ऊंची दीवार के साथ-साथ, पेड़ों के एक झुंड के पास, महावतों ने अपने तंबू लगा रखे हैं. वहां खुले में उन्होंने आग जला रखी है और हाथियों के लिये खिचड़ी पका रहे हैं. हाथियों को पेड़ों के साथ ज़ंजीरों से बाँध कर रखा गया है ताकि वह यहाँ-वहां न भटकने लगे. सब हाथियों पर रंग-बिरंगी चित्रकारी की गयी है. महावतों के बच्चे भाग-भाग कर हाथियों को खिचड़ी के बने लड्डू खिला रहे हैं.
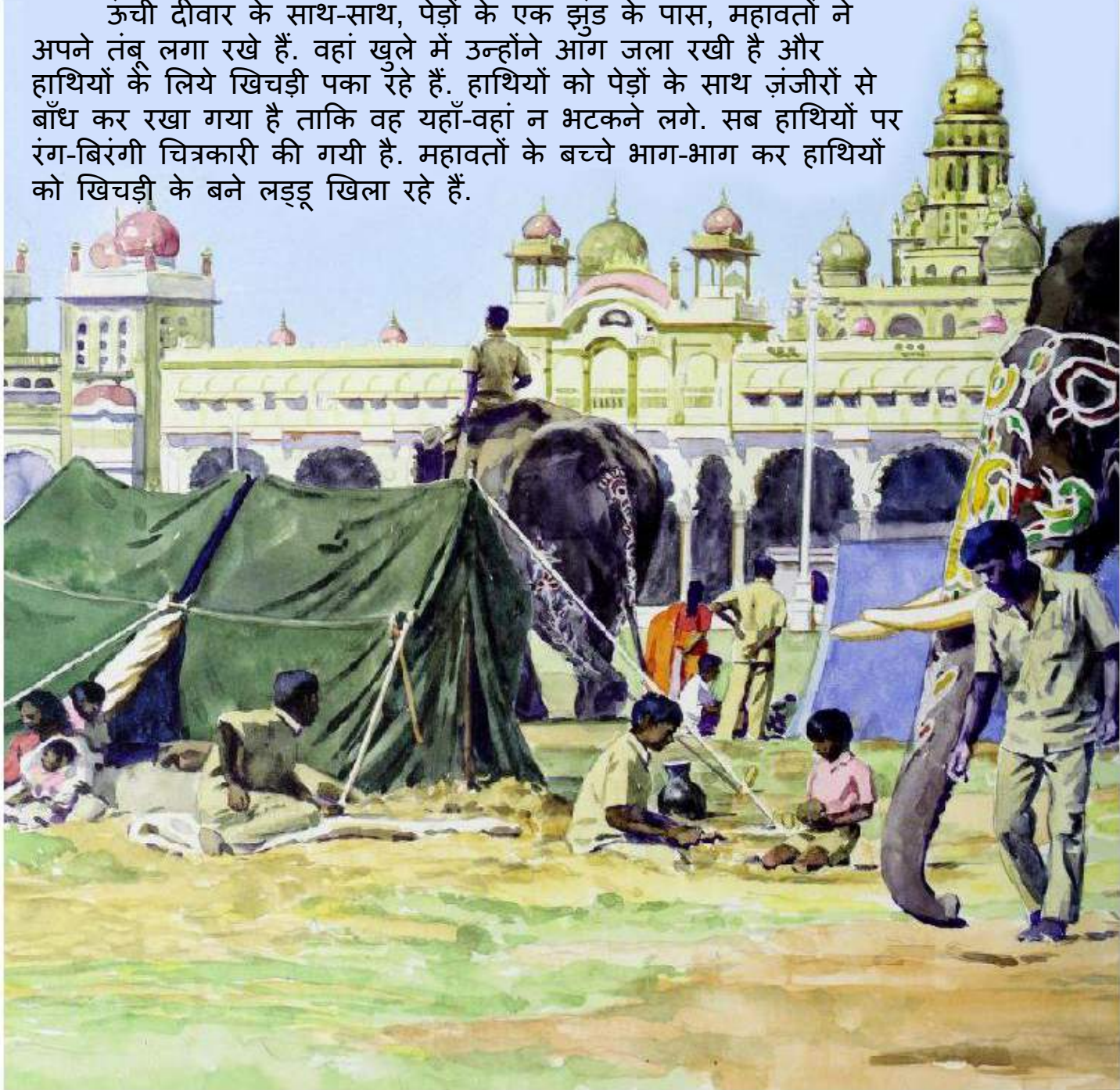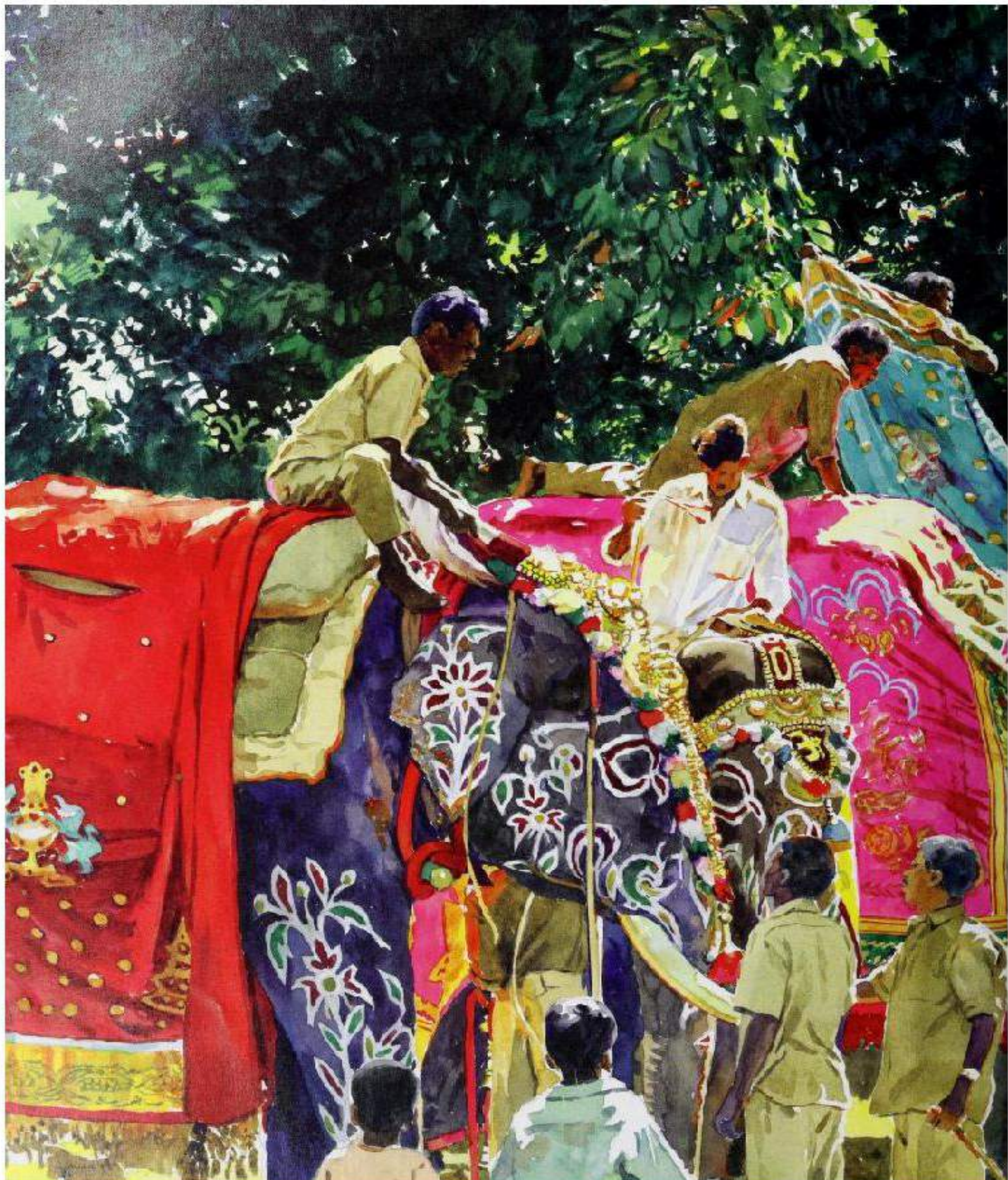
कुछ समय बाद महावत हाथियों को धीरे-धीरे, मैदान के एक तरफ, छायादार सहन की ओर ले आते हैं. वहां हाथियों पर रेशम और साटन के बने सुंदर वस्त्र डाले जाते हैं. यह वस्त्र इतने बड़े हैं की हाथियों के दोनों ओर नीचे तक लटक रहे हैं. इन वस्त्रों की चमक हमें चकाचौंध कर देती है.
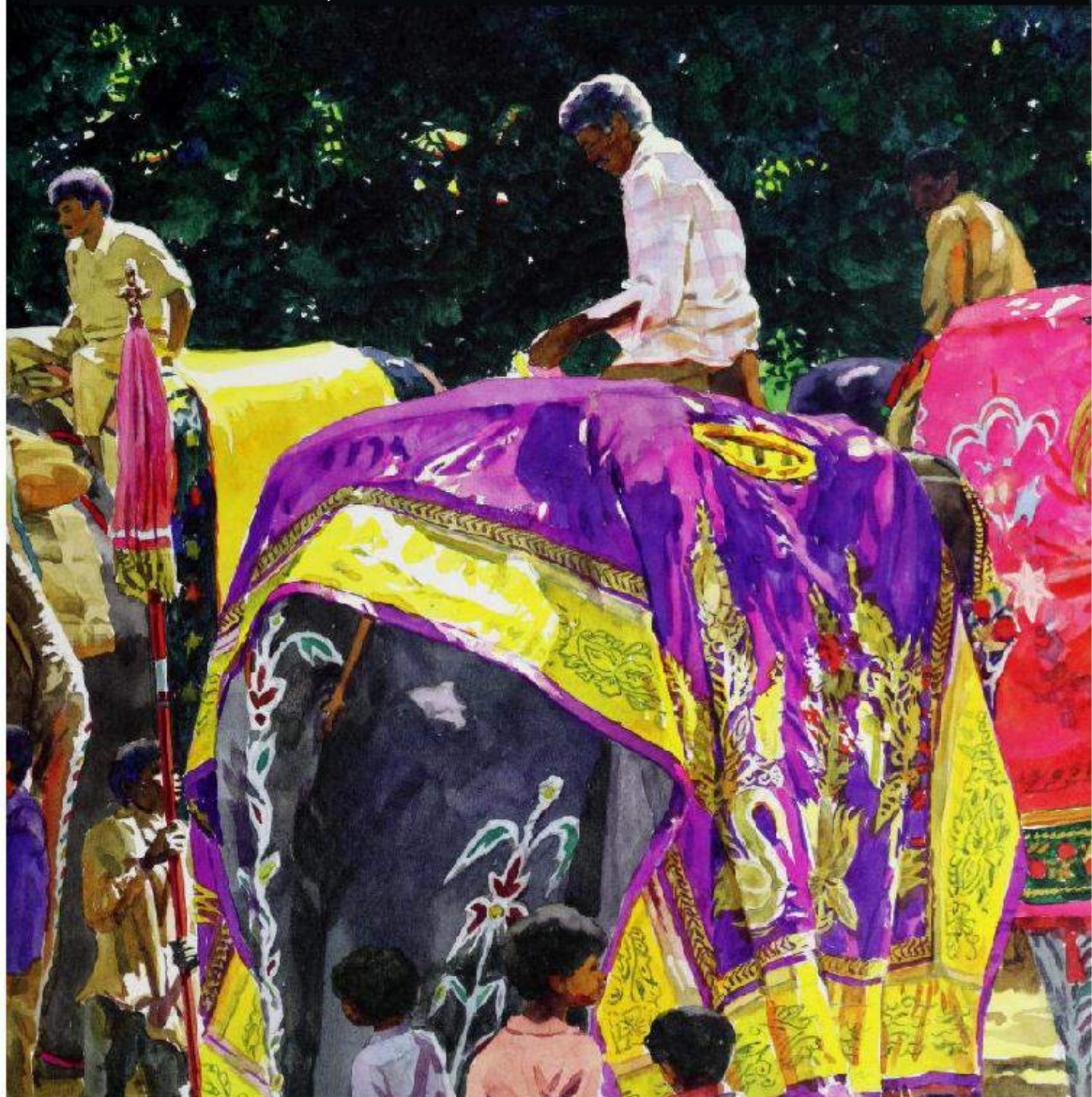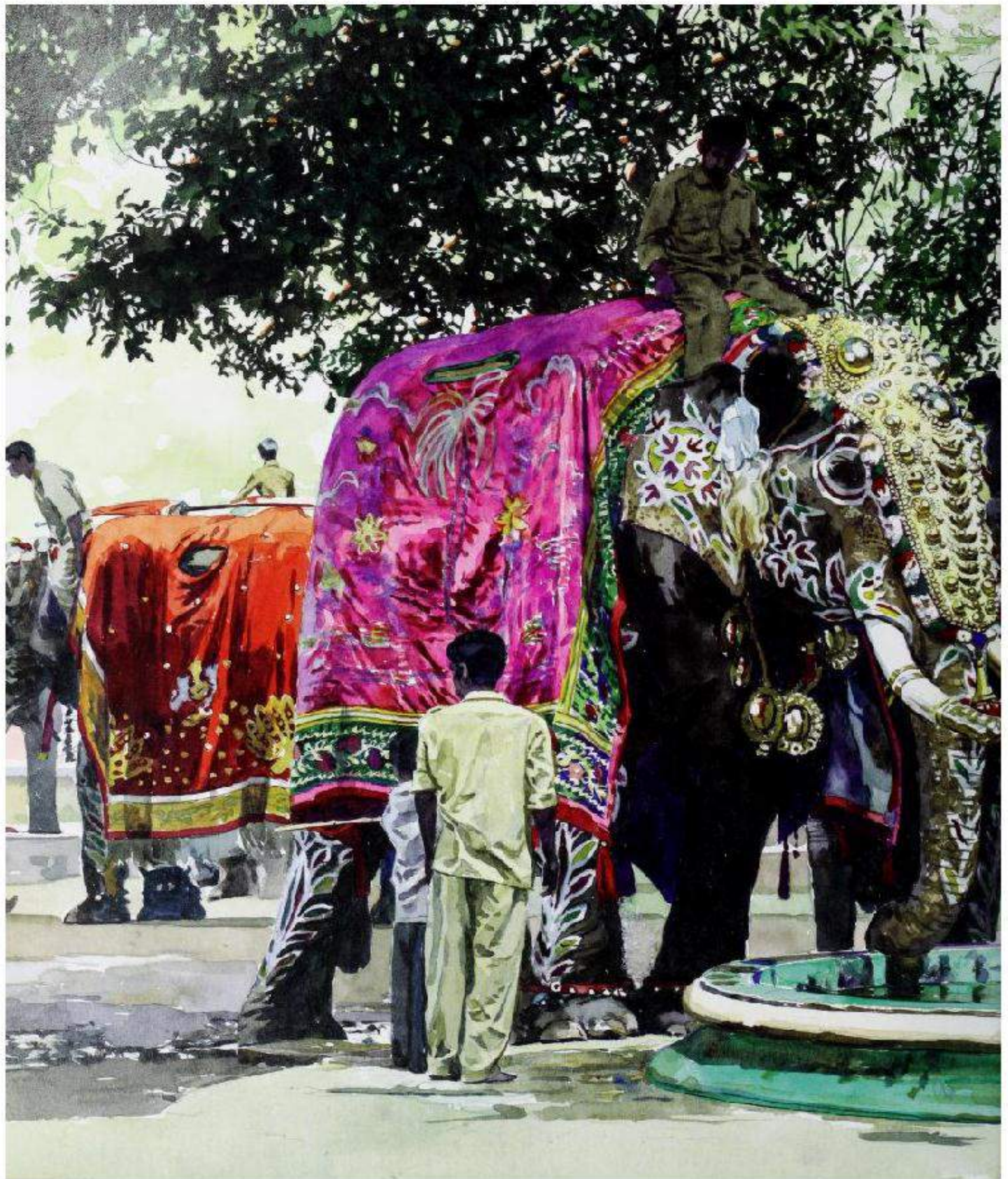
जब हाथी सजधज कर तैयार हो जाते हैं तो उन्हें संगमरमर के एक हौज़ के पास लाया जाता है. हौज़ एक विशाल छायादार आम का पेड़ के पास है. हाथी मन भरकर पानी पीते हैं.
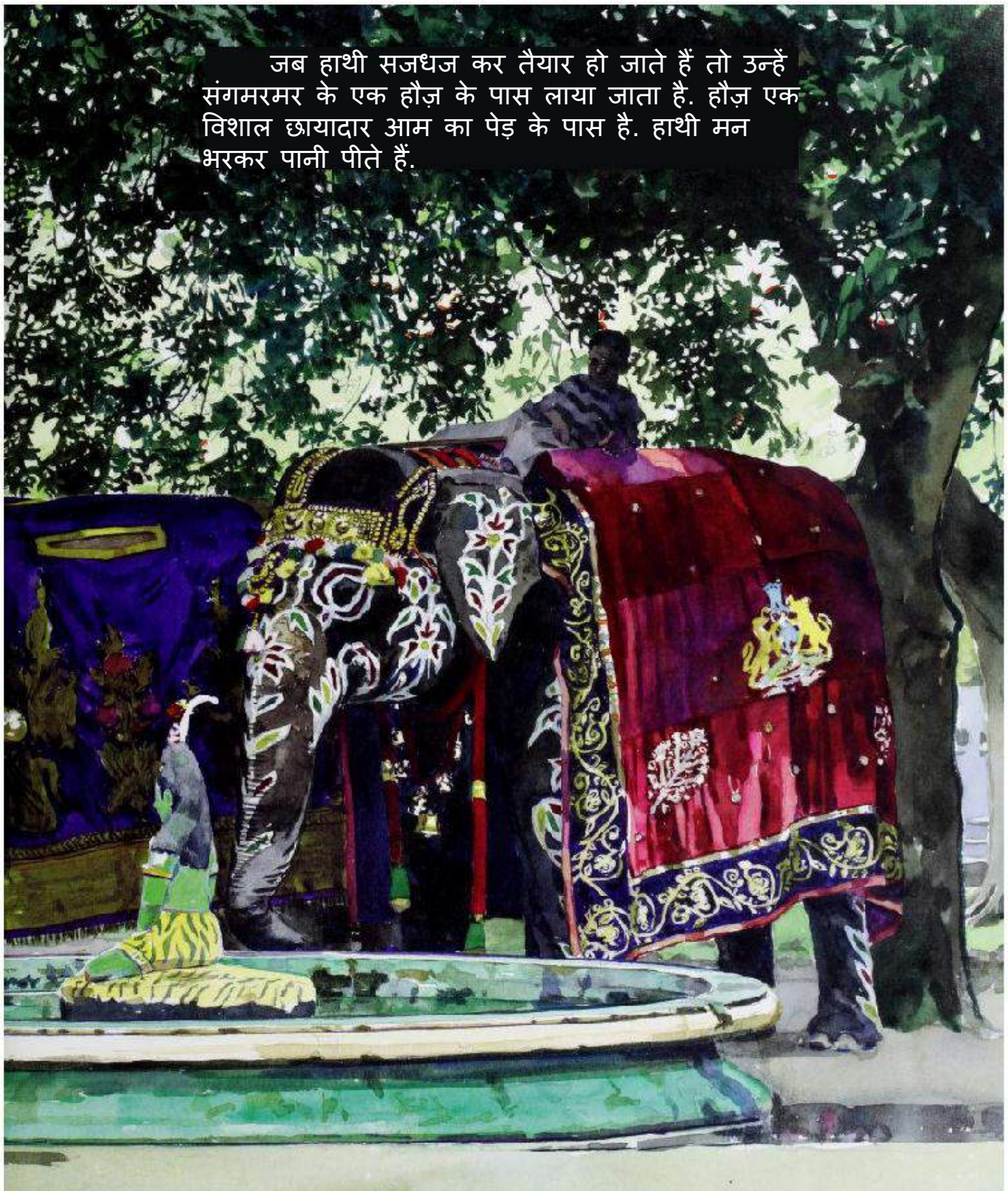
अम्बरी हाथी बलराम

"देखो! देखो! बलराम आ रहा है!" भीड़ में खड़े लोगों चिल्लाते हैं.

तेजस्वी बलराम धीरे-धीरे मैदान को पार करता हुआ वहां आता जहां उसे तैयार किया जाना है. एक पेड़ के पास बने एक चबूतरे पर खड़े हो कर, महावत बलराम के विशाल सर को प्यार से अपनी बाहों में भर कर उसे गले लगाता है. महावत बलराम की बड़ी-बड़ी पलकों को हौले-हौले थपथपाता है. हाथी की सूँड़, घबराई सी, ज़मीन को यहाँ-वहां टटोलती है.

बलराम की सजावट शुरू होती है. रेशम के वस्त्र उस पर डाले जाते हैं. फिर स्वर्ण हौदा उसकी पीठ पर टिकाया जाता है. इसके लिए उसे एक ख़ास उपकरण के नीचे खड़ा किया जाता है. फिर उस उपकरण की सहायता से हौदा उसकी पीठ पर रखा जाता है. सब काम बहुत सावधानी के साथ किया जाता है.

बलराम के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घड़ी निकट आ रही है. हम भी उत्तेजित हैं और बलराम के लिये थोड़ा चिंतित भी हैं. आवश्यक है कि लोगों के शोर-शराबे से विचलित हुए बिना, वह पूरी तरह शांत और स्थिर रहे. हम कामना कर रहे हैं कि अम्बरी हाथी के रूप में उसका आगमन प्रभावशाली हो.
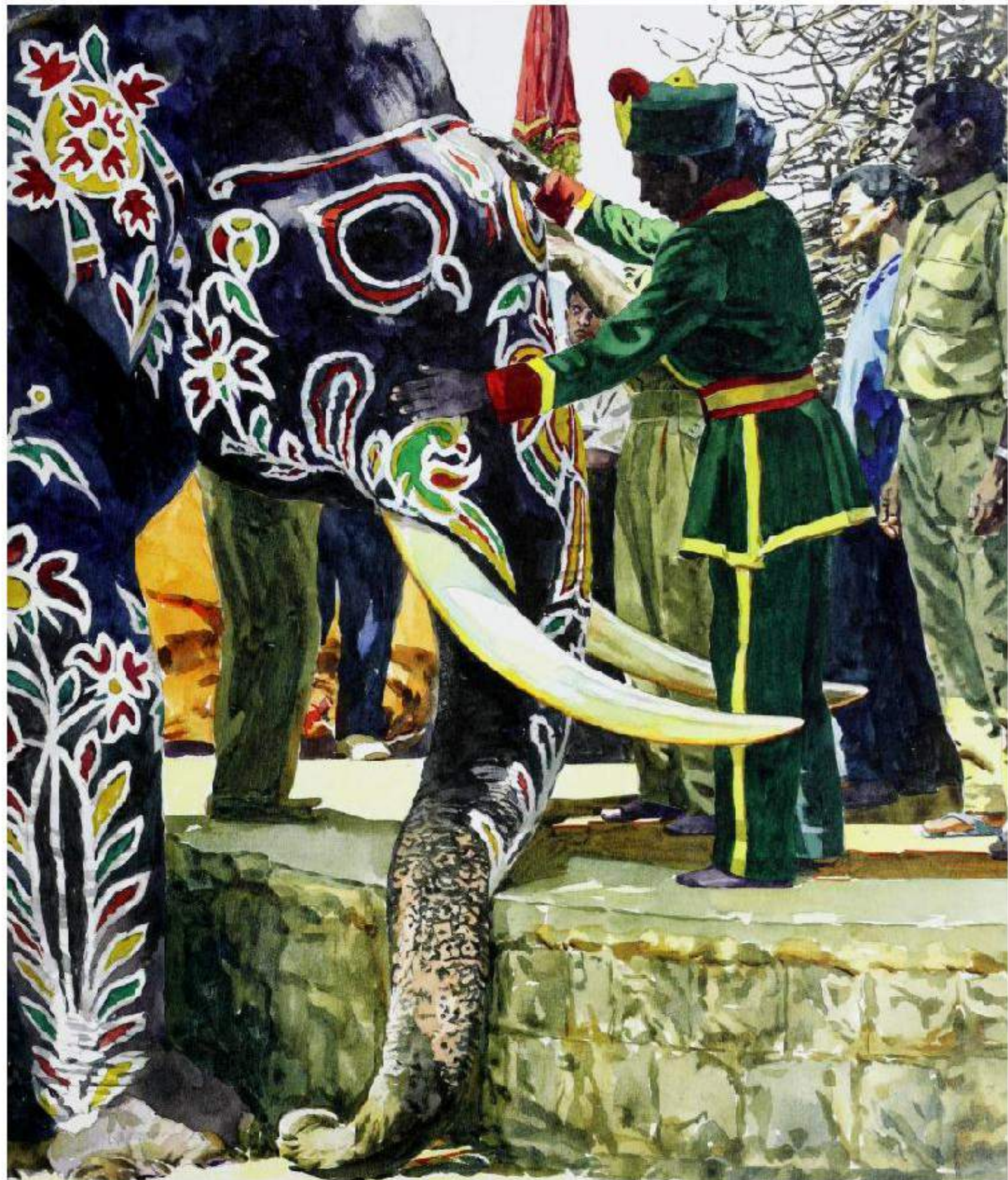
आखिरकार चिलचिलाती धूप में समारोह शुरू होता है.

टप..टप..टप..टप. सबसे पहले सुंदर पगड़ियां पहने घुड़सवार पुलिस का दस्ता आता है. घुड़सवारों ने लंबे भाले पकड़ रखे हैं, जिन पर झंडे लगे हुए हैं. सब घुड़सवार अकड़ कर बैठे हैं. उनके पीछे छात्र-सैनिक, सिपाही और अन्य पुलिस के दस्ते हैं. सब दस्ते महल के सामने एक बड़े मैदान में इकट्ठे हो रहे हैं.
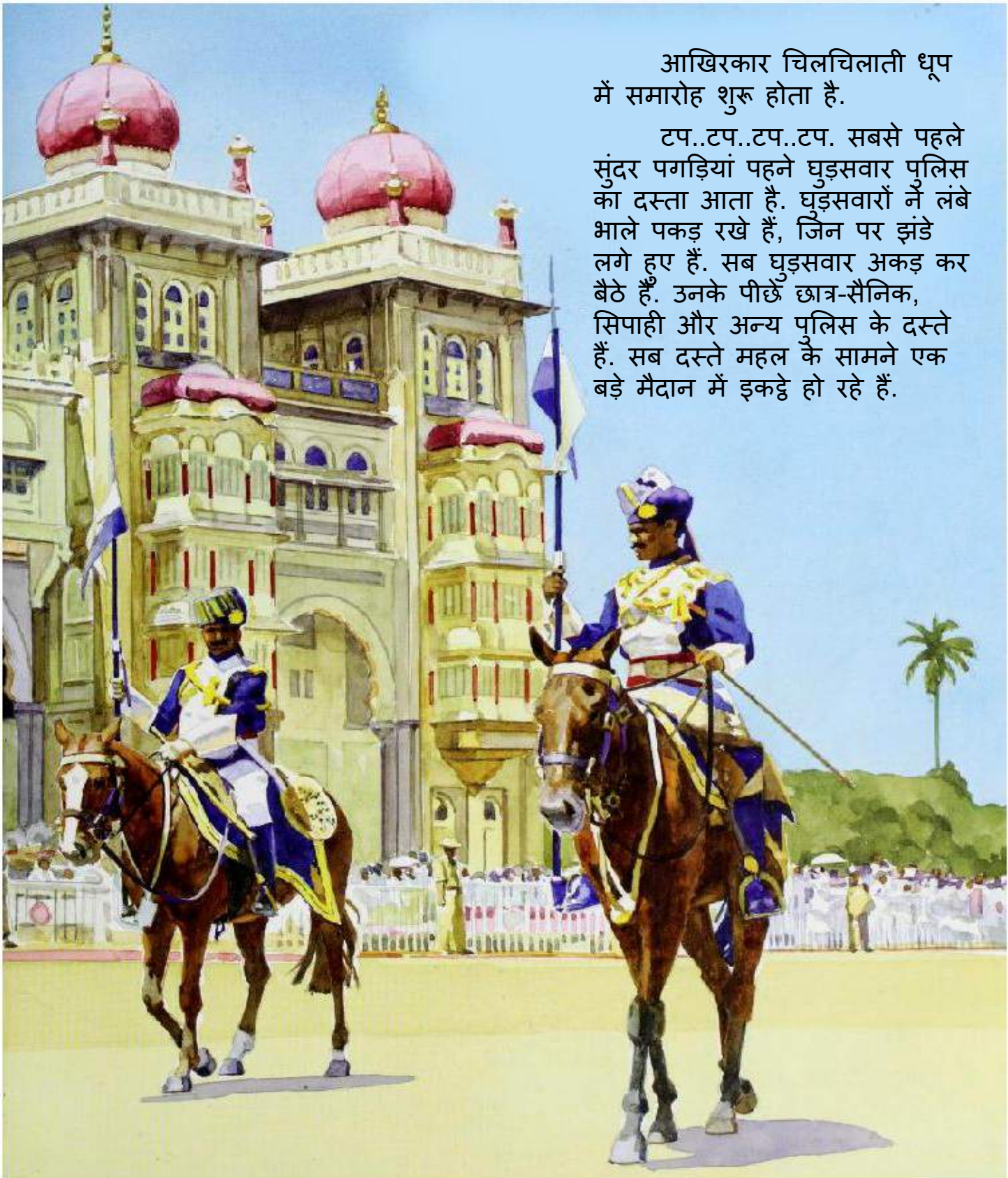
सब घुड़सवार मुस्तैदी से खड़े हैं. उस गर्म वातावरण में हर ओर उत्तेजना फैली हुई है. भीड़ में हर कोई गर्दन उचका कर आगे देखने की कोशिश कर रहा है.
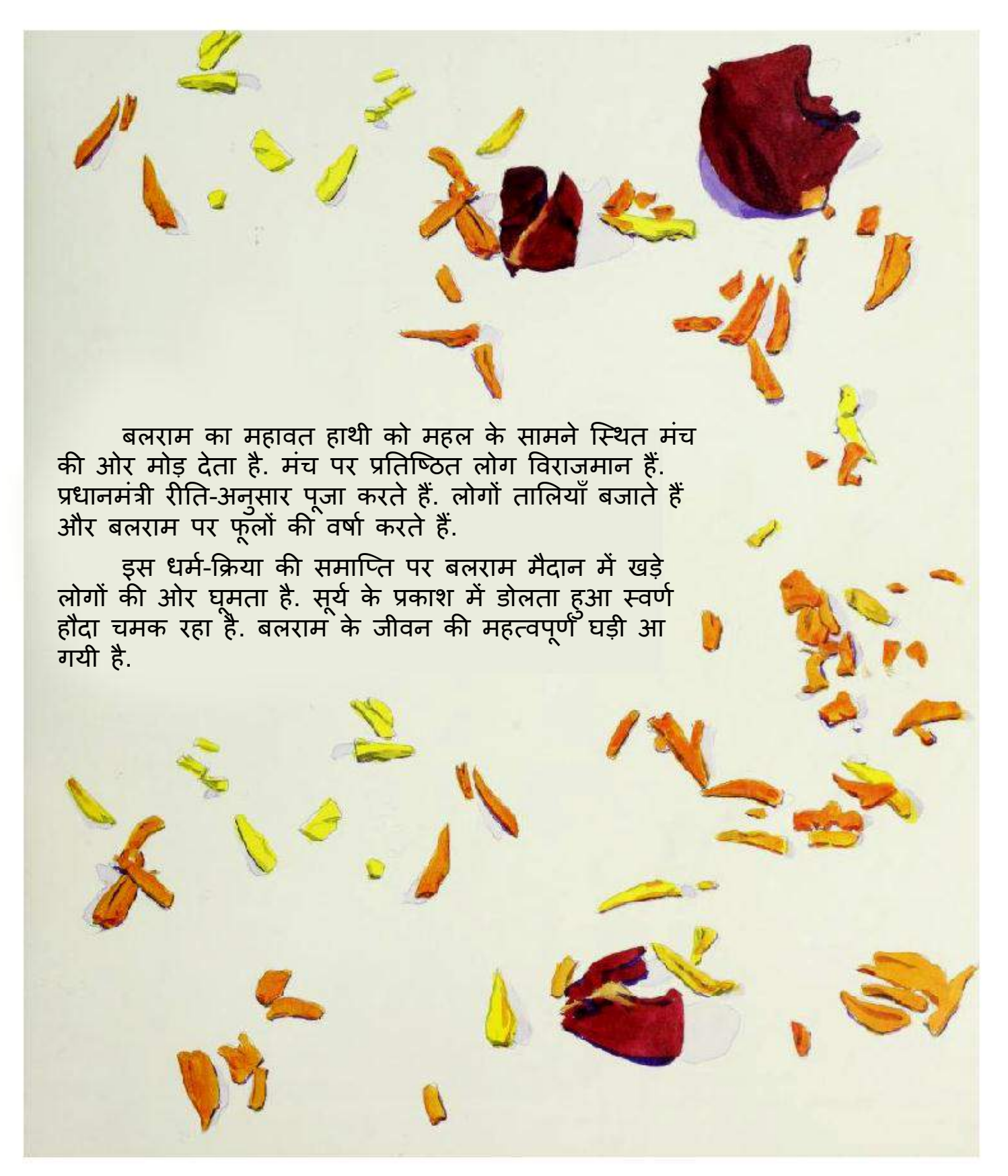
तभी बलराम दिखाई देता है - पीठ पर स्वर्ण हौदा उठाये.
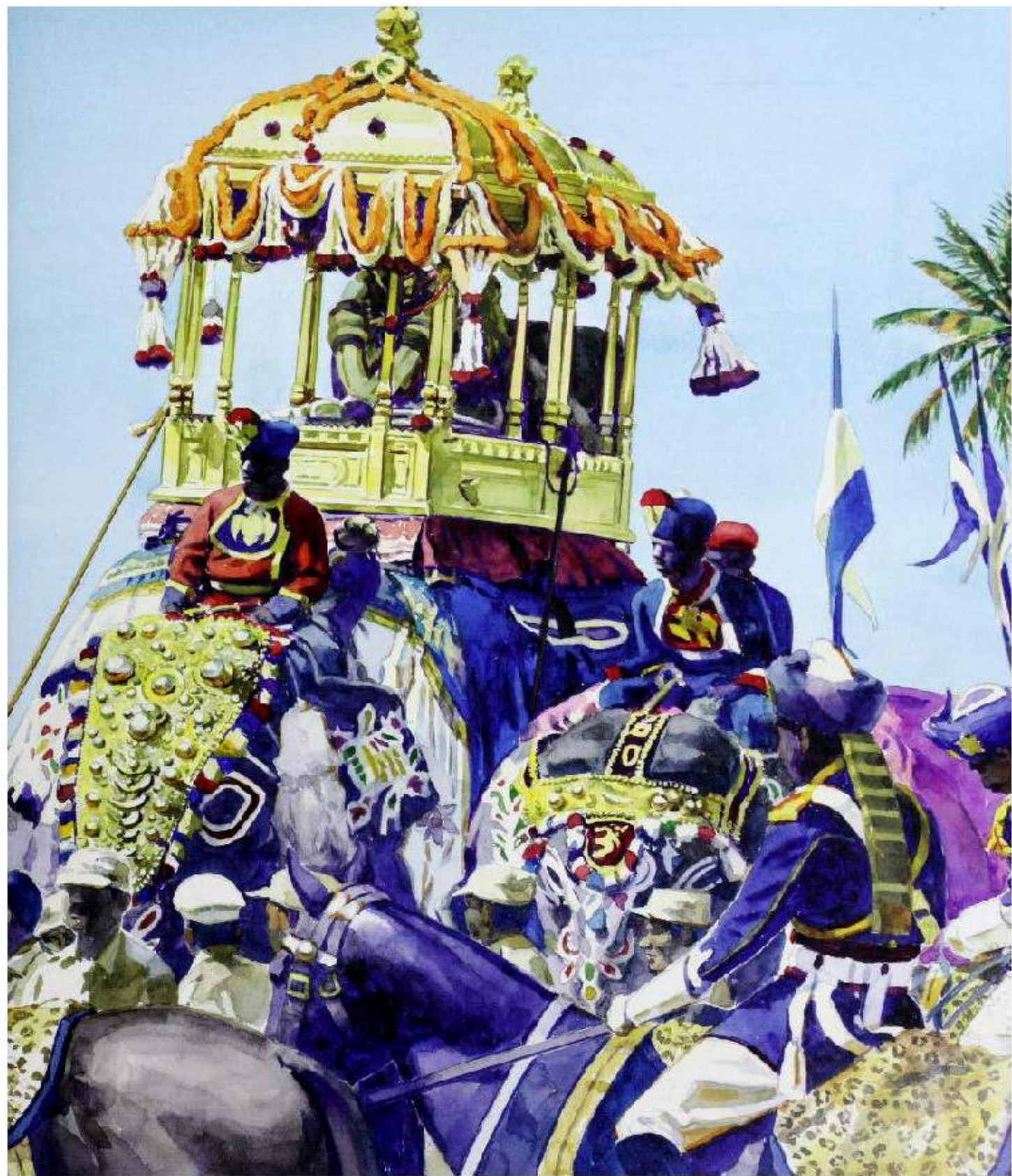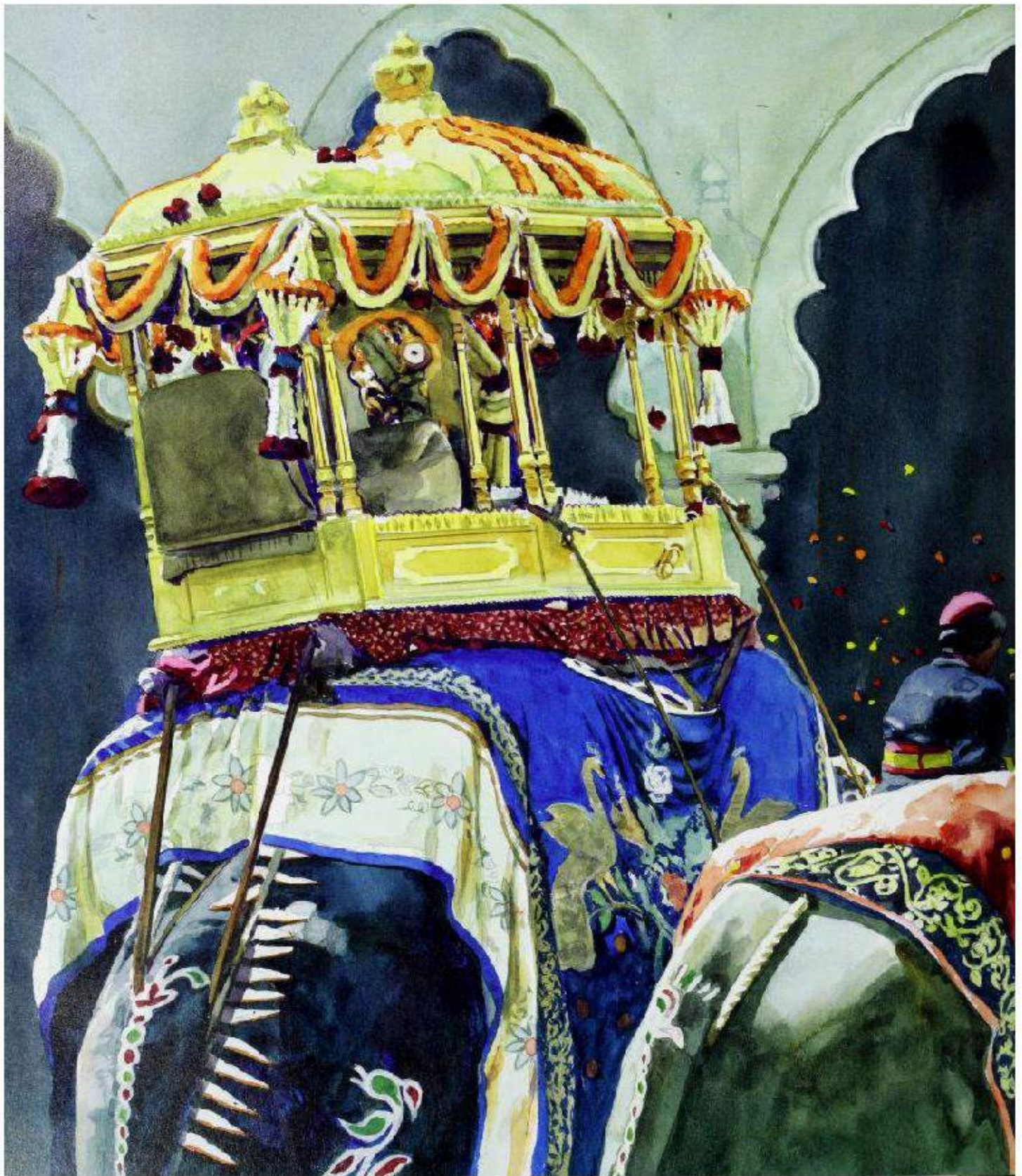
बलराम का महावत हाथी को महल के सामने स्थित मंच की ओर मोड़ देता है. मंच पर प्रतिष्ठित लोग विराजमान हैं. प्रधानमंत्री रीति-अनुसार पूजा करते हैं. लोगों तालियाँ बजाते हैं और बलराम पर फूलों की वर्षा करते हैं.

इस धर्म-क्रिया की समाप्ति पर बलराम मैदान में खड़े लोगों की ओर घूमता है. सूर्य के प्रकाश में डोलता हुआ स्वर्ण हौदा चमक रहा है. बलराम के जीवन की महत्वपूर्ण घड़ी आ गयी है.

लगभग एक मील लंबी शोभायात्रा की अगुआई करता हुआ, बलराम शान से महल के एक फाटक की ओर चल देता है. बलराम के पीछे-पीछे अलग-अलग बैंड और सिपाहियों की टुकड़ियाँ चल रही हैं. जोश से भरे, वह सब मंच के सामने से निकलते हुए, मैसूर नगर में प्रवेश करते हैं. बलराम की पहली शोभायात्रा देखने के लिये रास्तों पर भीड़ जमा हो रखी है.

हम भी गर्व से फूले न समा रहे हैं. वह बहुत ही बढ़िया तरीके से शोभायात्रा की अगुआई कर रहा है.

फिर नर्तक और कलाकार आते हैं.

रंग-बिरंगी पोशाकें पहने कुछ कलाकार बांसों पर इठलाते हुए चल रहे हैं.
ढोलों की थाप पर उछलते, घूमते, नाचते, गाते नर्तक आगे जा रहे हैं.

फिर आते हैं वह कलाकार जो बड़ी-बड़ी लाठियों से एक-दूसरे के साथ लड़ने का अभिनय करते हैं.

शोभायात्रा के अंत में अन्य हाथी हैं. उन पर लटकते रेशम के वस्त्र सूर्य की तेज़ रोशनी में झिलमिला रहे हैं. शोभायात्रा धीरे-धीरे महल से बाहर आ जाती है. शोभायात्रा की भव्यता से प्रभावित हो कर हम भी यात्रा के साथ चलती भीड़ में सम्मिलित हो जाते हैं.

एक दिन बाद

सुबह का समय है. महल के मैदान में अपने अस्तबल के बाहर बलराम अपना खाना खा रहा है. उसके शरीर पर बनाई चित्रकारी कुछ फीकी पड़ गयी है. उसका महावत उसके पास ज़मीन पर ही बैठा है.

हम निकट आते हैं.

“बलराम, तुम्हारा प्रदर्शन बहुत ही उत्कृष्ट था,” हमने कहा.

हमारी आवाज़ सुन कर वह हमारी ओर घूमता है. उसके कान हलके से लहराते हैं. उसकी सूँड़ धीरे से आगे-पीछे घूमती है. उसकी हर सांस से धूल उड़ कर हवा में फ़ैल जाती है. वह बहुत शांत और संतुष्ट दिखाई देता है.

बाद में हम टाइम्स ऑफ़ इंडिया में एक लेख पढ़ते हैं. बलराम का चित्र मुख्य पृष्ठ पर है. चित्र के नीचे लिखा है, “मैसूर दशहरा की शोभायात्रा में स्वर्ण हौदा उठाने के लिए बलराम हाथी को पहली बार चुना गया था. उसका प्रदर्शन उत्तम था.”

उस शानदार महोत्सव को याद रखने के लिये हमने अख़बार से बलराम का चित्र काट कर रख लेते हैं. हमें द्रोण का भी ध्यान आता है. शोभायात्रा में उसे स्वर्ण हौदा उठाये हुए देखने के लिये हमने एक वर्ष तक प्रतीक्षा की थी. लेकिन अब बलराम ने उन सब लोगों का मन मोह लिया है जिन्होंने उसे, स्वर्ण हौदा उठाए, बड़े अभिमान के साथ चलते देखा था.

निःसंदेह वह एक अम्बरी हाथी है, सबसे महान शाही हाथी.
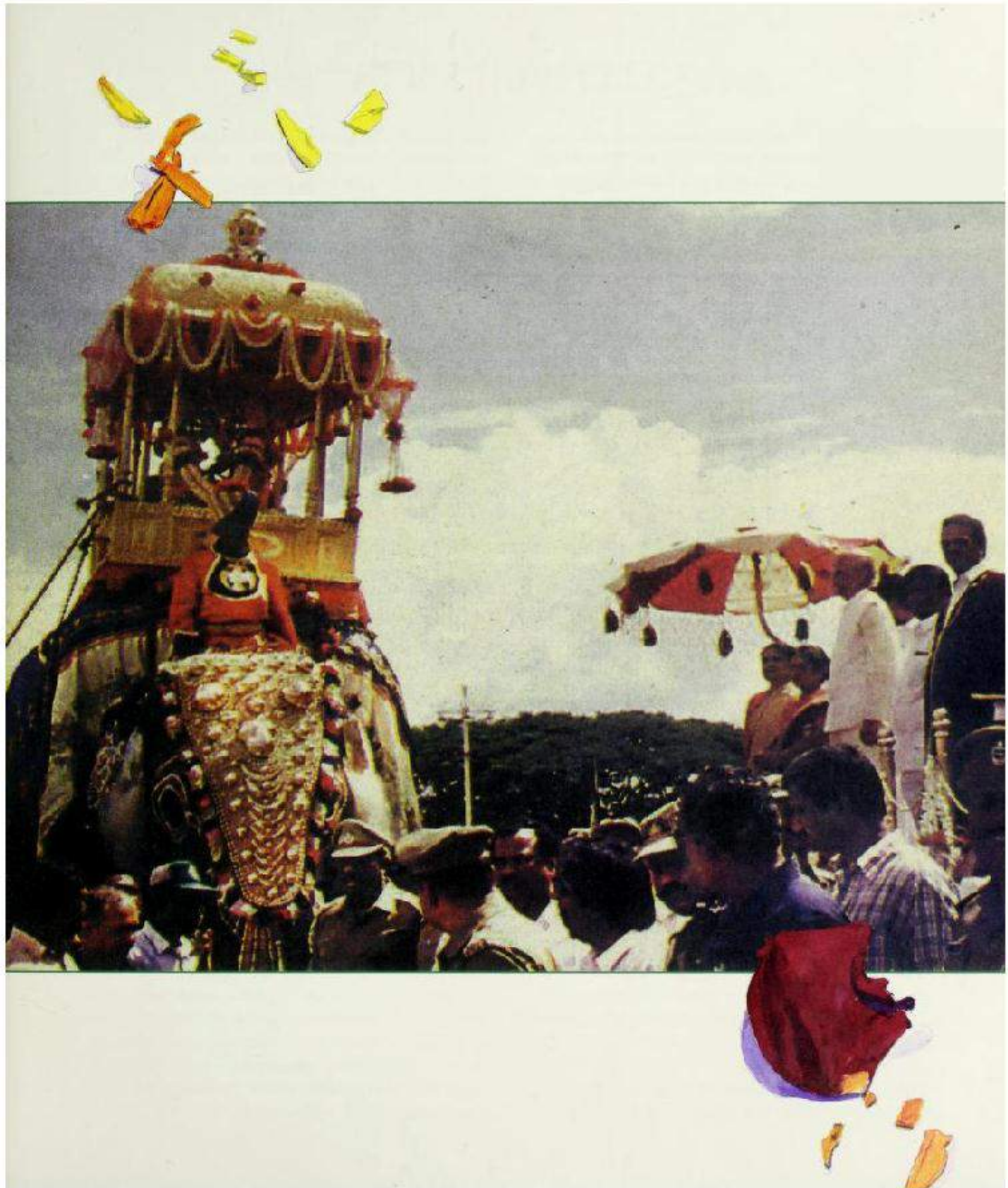
हाथियों के सम्बन्ध में कुछ तथ्य

हाथी धरती पर रहने वाले सब से बड़े जीव हैं. यह एशिया और अफ्रीका में पाए जाते हैं. सब हाथी संकट में हैं. शताब्दियों से हाथियों का शिकार किया जा रहा है. उनके निवास स्थान भी धीरे-धीरे घट रहे हैं इस कारण उनकी संख्या में भरी कमी आई है. भारत में हाथियों का संरक्षण हाथियों के जीवित रहने के लिये तो अनिवार्य है ही, लेकिन देश की सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक परम्पराओं के लिये भी महत्वपूर्ण है.

एशियाई हाथियों और अफ़्रीकी हाथियों में कई शारीरिक भेद हैं.
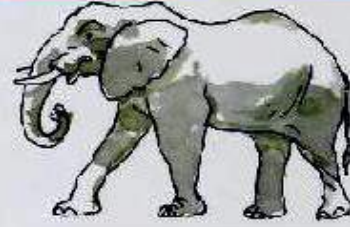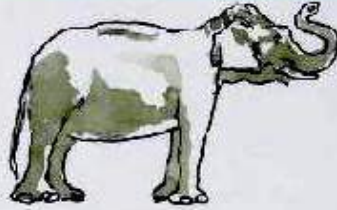
एशियाई हाथी		अफ़्रीकी हाथी
ऊँचाई	6.5 से 11.5 फुट	10 से 13 फुट
वज़न	6600 से 11000 पौंड	8900 से 15400 पौंड
लंबाई	18 से 21 फुट	19.5 से 25 फुट
सर	ऊपर से टेढ़ा	ऊपर से सीधा
कान	छोटे जो गर्दन को नहीं ढकते	बड़े, गर्दन को ढकते हुए
पीठ	गोल रूपरेखा	टेढ़ी रूपरेखा
सूँड़	अगले सिरे पर एक 'अंगुल'	अगले सिरे पर दो
दांत	नर हाथियों के होते है,	'अंगुलियां' नर और
	मादा-हाथियों में कम.	मादा दोनों के होते हैं.

हाथी की सूँड़ में हज़ारों मांस-पेशियाँ होती हैं. अपनी सूँड़ से हाथी भारी सामान उठा सकते हैं और छोटी-छोटी चीज़ें भी पकड़ लेते हैं. सूँड़ की सहायता से वह पानी पीते हैं और अपने शरीर पर पानी की बौछार भी कर लेते हैं. सूँड़ से फूंक कर अपनी ऊपर मिट्टी डाल लेते हैं.

हाथी अपने कानों को हिला कर अपने शरीर को ठंडा रखते हैं. जब वह पंखे समान कान हिलाते हैं तो कान की धमनियों में बहता लहू ठंडा हो जाता है. फिर ठंडा लहू घूम कर सारे शरीर को ठंडा कर देता है. अधिक गर्मी में हाथी या तो पानी में डुबकियां लगाते हैं या पेड़ों की छाया में रहते हैं.

जिस तरह कुछ मानव दायें हाथ का अधिक उपयोग करते हैं और कुछ बाएं का, इस तरह कुछ हाथी सूँड़ का दाईं ओर से और कुछ बाईं ओर से अधिक उपयोग करते हैं.

हाथी-दाँत सामान्य दाँत हैं जो बहुत बड़े हो जाते हैं. अपने दांतों से वह ज़मीन खोदने, पेड़ छीलने, पेड़ों की डालों को रास्ते से हटाने का काम लेते हैं. लड़ाई में इन्हें शस्त्र की तरह भी उपयोग करते हैं.

हाथियों के पैर चौड़े, गद्दीदार होते हैं. इस कारण भारी-भरकम होते हुए भी वह बिना आवाज़ किये चल पाते हैं. वह चार मील प्रति घंटे की रफ्तार से चलते हैं और थोड़े फासले के लिए दौड़ भी लेते हैं.

हाथी शाकाहारी प्राणी होते हैं और खाने की तलाश में बहुत दूर निकल जाते हैं. वयस्क हाथी दिन में तीन सौ पौंड खाना खा जाता है. जंगल में वह घास, पत्ते, जड़ें, छाल, फल, छोटे पौधे वगैरह खाते हैं. दिन में एक हाथी 19 से 24 गैलन पानी पीता है.

एक दूसरे को संदेश पहुंचाने के लिए हाथी गर्जन, घरघराने, करहाने की आवाज़ निकालते हैं. क्रोध, भय या उत्तेजना में वह चिंघाड़ते हैं. वह लो- फ्रीक्वेंसी (low-frequency) की आवाज़ भी निकालते है जो कई मील दूर तक सुनी जा सकती है.

मादा-हाथी तीन से छह वर्ष में एक बच्चे को जन्म देती है. वह बीस से चौबीस महीने तक गर्भ धारण करती है. आमतौर पर एक समय में एक ही बच्चा जन्म लेता है. हाथी के बच्चे का वज़न 200 से 300 पौंड होता है. उसकी ऊँचाई कोई तीन फुट होती है. जन्म के दो घंटे बाद ही बच्चा चलना शुरू कर देता है.

हाथियों के झुंडों में सिर्फ हथनियाँ और बच्चे ही होते हैं. सबसे बड़ी हथनी झुंड की अगुआई करती है. वयस्क होते ही नर हाथी झुण्ड से अलग हो जाते हैं. वह यह तो अकेले रहते हैं या छोटे नर-हाथियों के साथ अलग झुंडों में रहते हैं.

हाथी की आयु पचास से सत्तर वर्ष तक होती है.

मैसूर दशहरे के शाही हाथी

मैसूर दशहरा की शोभायात्रा के मुख्य आकर्षण शाही हाथी होते हैं. इन हाथियों की, और विशेषकर अम्बरी हाथियों की, कहानियाँ यहाँ के इतिहास और दंतकथाओं का भाग बन गई हैं. यह हैं पिछले कुछ दशकों के अम्बरी हाथी:

बिलिगिरीरंगा एक दस फुट ऊँचा विशाल हाथी था जिसके दाँत दो फुट लंबे थे. बीसवीं सदी के मध्य में इस भव्य हाथी ने उत्सव की शोभा बढ़ाई थी. यह बहुत आज्ञाकारी हाथी था.

राजेन्द्र की 1971 में पकड़ा गया था. इसने शोभायात्रा की अगुआई की थी. परन्तु यह हाथी अपने कार्य से जल्दी ही भटक जाता था. उसके महावत को लगता था कि उसे कोई सही साथी न मिला था.

द्रोण 1982 से शोभायात्रा में भाग ले रहा था. वह बहुत बड़ा था और स्वर्ण हौदे को बड़ी कुशलता से अपनी पीठ पर संभाले रखता था. अपनी चाल-ढाल और अपने विनम्र व्यवहार के कारण सबका प्रिय बन गया था. लेकिन 1998 में एक दिन सड़क किनारे पत्ते खाते-खाते उसने एक पेड़ की डाल नीचे खींच ली थी. डाल बिजली के तारों पर आ गिरी थी और बिजली लगने से उसकी मौत हो गई थी.

अर्जुन को द्रोण की जगह लेने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था. एक दिन अर्जुन और अन्य हाथी नदी में नहाने के लिए ले जाये जा रहे थे. एक सड़क पार करते समय गाड़ियों का शोर सुन हाथी घबरा गए. भगदड़ मच गई. एक हाथी का महावत नीचे गिर गया और अर्जुन के पैरों तले आकर कुचला गया. लोगों को लगा कि जिस हाथी ने किसी मनुष्य को मार डाला था वह शोभायात्रा में भाग लेने योग्य न था.

बलराम 1998 से स्वर्ण हौदा उठा रहा है. शुरू में लोगों को लगा था कि वह यह काम न कर पायेगा. उत्सव में चलने वाली तोप के गोलों की आवाज़ सहने के लिये उस कुछ प्रशिक्षण भी देना पड़ा था. लेकिन बलराम ने सब दिक्कतों को पार किया और वह शोभायात्रा का एक मुख्य आकर्षण बनने में सफल हुआ. 2008 में उसने ग्यारहवीं बार यात्रा की अगुआई की.

समाप्त
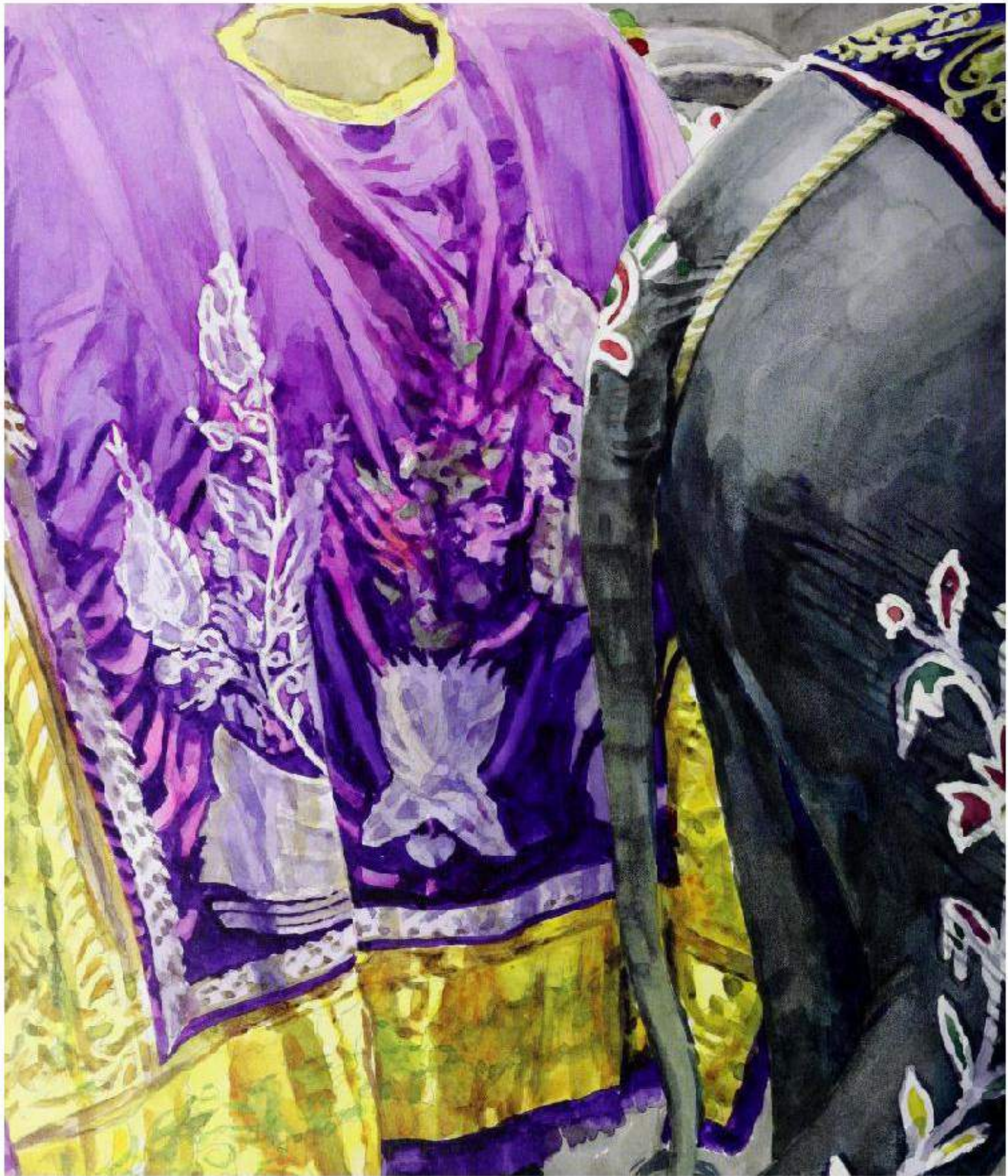
टेड और बेट्सी ने पूरी दुनिया की रोमांचक यात्रायें की हैं.

बच्चों की किताबों और सुन्दर चित्रों के लिए उन्होंने दुनिए के अनेकों पुरुस्कार जीते हैं.